

श्रीमद्भागवतम्

स्कन्ध 3



SGD

श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 13

वराह भगवान् का प्राकट्य

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे राजन्, मैत्रेय मुनि से इन समस्त पुण्यतम कथाओं को सुनने के बाद विदुर ने पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की कथाओं के विषय में और अधिक पूछताछ की, क्योंकि इनका आदरपूर्वक सुनना उन्हें पसन्द था।

श्लोक 2: विदुर ने कहा : हे मुनि,
ब्रह्मा के प्रिय पुत्र स्वायम्भुव ने अपनी
अतीव प्रिय पत्नी को पाने के बाद
क्या किया?

श्लोक 3: हे पुण्यात्मा श्रेष्ठ,
राजाओं का आदि राजा (मनु) भगवान्
हरि का महान् भक्त था, अतएव उसके
शुद्ध चरित्र तथा कार्यकलाप सुनने
योग्य हैं। कृपया उनका वर्णन करें। मैं
सुनने के लिए अतीव उत्सुक हूँ।

श्लोक 4: जो लोग अत्यन्त
श्रमपूर्वक तथा दीर्घकाल तक गुरु से

श्रवण करते हैं उन्हें शुद्धभक्तों के चरित्र तथा कार्यकलापों के विषय में शुद्धभक्तों के मुख से ही सुनना चाहिए। शुद्ध भक्त अपने हृदयों के भीतर सदैव उन भगवान् के चरणकमलों का चिन्तन करते हैं, जो अपने भक्तों को मोक्ष प्रदान करने वाले हैं।

श्लोक 5: श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा : भगवान् कृष्ण विदुर की गोद में अपना चरणकमल रख कर प्रसन्न थे, क्योंकि विदुर अत्यन्त विनीत तथा भद्र थे। मैत्रेय मुनि विदुर के शब्दों से

अति प्रसन्न थे और अपनी आत्मा से प्रभावित होकर उन्होंने बोलने का प्रयास किया।

श्लोक 6: मैत्रेय मुनि ने विदुर से कहा : मानवजाति के पिता मनु अपनी पत्नी समेत अपने प्राकट्य के बाद वेदविद्या के आगार ब्रह्मा को नमस्कार करके तथा हाथ जोड़ कर इस प्रकार बोले।

श्लोक 7: आप सारे जीवों के पिता तथा उनकी जीविका के स्रोत हैं, क्योंकि वे सभी आपसे उत्पन्न हुए

हैं। कृपा करके हमें आदेश दें कि हम आपकी सेवा किस तरह कर सकते हैं।

श्लोक 8: हे आराध्य, आप हमें हमारी कार्यक्षमता के अन्तर्गत कार्य करने के लिए अपना आदेश दें जिससे हम इस जीवन में यश के लिए तथा अगले जीवन में प्रगति के लिए उसका पालन कर सकें।

श्लोक 9: ब्रह्माजी ने कहा, हे प्रिय पुत्र, हे जगत् के स्वामी, मैं तुम से अति प्रसन्न हूँ और तुम्हारे तथा

तुम्हारी पत्नी दोनों ही के कल्याण की कामना करता हूँ। तुमने मेरे आदेशों के लिए अपने हृदय से बिना सोचे विचारे अपने आपको मेरे शरणागत कर लिया है।

श्लोक 10: हे वीर, तुम्हारा उदाहरण पिता-पुत्र सम्बन्ध के सर्वथा उपयुक्त है। बड़ों की इस तरह की पूजा अपेक्षित है। जो ईर्ष्या की सीमा के परे है और विवेकी है, वह अपने पिता के आदेश को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार

करता है और अपने पूरी सामर्थ्य से उसे सम्पन्न करता है।

श्लोक 11: चूँकि तुम मेरे अत्यन्त आज्ञाकारी पुत्र हो इसलिए मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम अपनी पत्नी के गर्भ से अपने ही समान योग्य सन्तानें उत्पन्न करो। तुम पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की भक्ति के सिद्धान्तों का पालन करते हुए सारे जगत पर शासन करो और इस तरह यज्ञ सम्पन्न करके भगवान् की पूजा करो।

श्लोक 12: हे राजन्, यदि तुम भौतिक जगत में जीवों को उचित सुरक्षा प्रदान कर सको तो मेरे प्रति वह सर्वोत्तम सेवा होगी। जब परमेश्वर तुम्हें बद्धजीवों के उत्तम रक्षक के रूप में देखेंगे तो इन्द्रियों के स्वामी निश्चय ही तुम पर अतीव प्रसन्न होंगे।

श्लोक 13: पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् जनार्दन (कृष्ण) ही समस्त यज्ञ फलों को स्वीकार करने वाले हैं। यदि वे तुष्ट नहीं होते तो प्रगति के लिए किया गया मनुष्य का श्रम व्यर्थ है। वे चरम

आत्मा हैं, अतएव जो व्यक्ति उन्हें तुष्ट नहीं करता वह निश्चय ही अपने ही हितों की उपेक्षा करता है।

श्लोक 14: श्री मनु ने कहा : हे सर्वशक्तिमान प्रभु, हे समस्त पापों के संहर्ता, मैं आपके आदेशों का पालन करूँगा। कृपया मुझे मेरा तथा मुझसे उत्पन्न जीवों के बसने के लिए स्थान बतलाएँ।

श्लोक 15: हे देवताओं के स्वामी, विशाल जल में डूबी हुई पृथ्वी को ऊपर उठाने का प्रयास करें, क्योंकि

यह सारे जीवों का वासस्थान है। यह आपके प्रयास तथा भगवान् की कृपा से ही सम्भव है।

श्लोक 16: श्री मैत्रेय ने कहा : इस प्रकार पृथ्वी को जल में डूबी हुई देखकर ब्रह्मा दीर्घकाल तक सोचते रहे कि इसे किस प्रकार उठाया जा सकता है।

श्लोक 17: ब्रह्मा ने सोचा : जब मैं सृजन कार्य में लगा हुआ था, तो पृथ्वी बाढ़ से आप्लावित हो गई और समुद्र के गर्त में चली गई। हम लोग जो

सृजन के इस कार्य में लगे हैं भला कर ही क्या सकते हैं? सर्वोत्तम यही होगा कि सर्वशक्तिमान हमारा निर्देशन करें।

श्लोक 18: हे निष्पाप विदुर, जब ब्रह्माजी विचारमग्न थे तो उनके नथुने से सहसा एक सूअर (वराह) का लघुरूप बाहर निकल आया। इस प्राणी की माप अँगूठे के ऊपरी हिस्से से अधिक नहीं थी।

श्लोक 19: हे भरतवंशी, तब ब्रह्मा के देखते ही देखते वह वराह विशाल काय हाथी जैसा अद्भुत विराट स्वरूप

धारण करके आकाश में स्थित हो गया।

श्लोक 20: आकाश में अद्भुत सूकर जैसा रूप देखने से आश्चर्यचकित ब्रह्माजी मरीचि जैसे महान् ब्राह्मणों तथा चारों कुमारों एवं मनु के साथ अनेक प्रकार से तर्क-वितर्क करने लगे।

श्लोक 21: क्या सूकर के बहाने से यह कोई असामान्य व्यक्तित्व आया है? यह अति आश्चर्यप्रद है कि वह मेरी नाक से निकला है।

श्लोक 22: प्रारम्भ में यह सूकर
अँगूठे के सिरे से बड़ा न था, किन्तु
क्षण भर में वह शिला के समान
विशाल बन गया। मेरा मन विक्षुब्ध है।
क्या वह पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु हैं?

श्लोक 23: जब ब्रह्माजी अपने
पुत्रों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे
तो पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु ने विशाल
पर्वत के समान गम्भीर गर्जना की।

श्लोक 24: सर्वशक्तिमान भगवान्
ने पुनः असाधारण वाणी से ऐसी
गर्जना कर के ब्रह्मा तथा अन्य

उच्चरथ ब्राह्मणों को जीवन्त कर
दिया, जिससे सारी दिशाओं में गूँज
उठीं।

श्लोक 25: जब जनलोक,
तपोलोक तथा सत्यलोक के निवासी
महर्षियों तथा चिन्तकों ने भगवान्
सूकर की कोलाहलपूर्ण वाणी सुनी,
जो सर्वकृपालु भगवान् की
सर्वकल्याणमय ध्वनि थी तो उन्होंने
तीनों वेदों से शुभ मंत्रों का उच्चारण
किया।

श्लोक 26: हाथी के समान क्रीड़ा करते हुए वे महान् भक्तों द्वारा की गई वैदिक स्तुतियों के उत्तर में पुनः गर्जना करके जल में घुस गये। भगवान् वैदिक स्तुतियों के लक्ष्य हैं, अतएव वे समझ गये कि भक्तों की स्तुतियाँ उन्हीं के लिए की जा रही हैं।

श्लोक 27: पृथ्वी का उद्धार करने के लिए जल में प्रवेश करने के पूर्व भगवान् वराह अपनी पूँछ फटकारते तथा अपने कड़े बालों को हिलाते हुए आकाश में उड़े। उनकी चितवन

चमकीली थी। और उन्होंने अपने
खुरों तथा चमचमाती सफेद दाढ़ों से
आकाश में बादलों को बिखरा दिया।

श्लोक 28: वे साक्षात् परम प्रभु
विष्णु थे, अतएव दिव्य थे, फिर भी
सूकर का शरीर होने से उन्होंने पृथ्वी
को उसकी गंध से खोज निकाला।
उनकी दाढ़ें अत्यन्त भयावनी थीं।
उन्होंने स्तुति करने में व्यस्त भक्त-
ब्राह्मणों पर अपनी दृष्टि दौड़ाई। इस
तरह वे जल में प्रविष्ट हुए।

श्लोक 29: दानवाकार पर्वत की
भाँति जल में गोता लगाते हुए भगवान्
वराह ने समुद्र के मध्यभाग को
विभाजित कर दिया और दो ऊँची
लहरें समुद्र की भुजाओं की तरह
प्रकट हुईं जो उच्च स्वर से आर्तनाद
कर रही थीं मानो भगवान् से प्रार्थना
कर रही हों, “हे समस्त यज्ञों के
स्वामी, कृपया मेरे दो खण्ड न करें।
कृपा करके मुझे संरक्षण प्रदान करें।”

श्लोक 30: भगवान् वराह तीरों
जैसे नुकीले अपने खुरों से जल में

घुस गये और उन्होंने अथाह समुद्र की सीमा पा ली। उन्होंने समस्त जीवों की विश्रामस्थली पृथ्वी को उसी तरह पड़ी देखा जिस तरह वह सृष्टि के प्रारम्भ में थी और उन्होंने उसे स्वयं ऊपर उठा लिया।

श्लोक 31: भगवान् वराह ने बड़ी ही आसानी से पृथ्वी को अपनी दाढ़ों में ले लिया और वे उसे जल से बाहर निकाल लाये। इस तरह वे अत्यन्त भव्य लग रहे थे। तब उनका क्रोध सुदर्शन चक्र की तरह चमक रहा था

और उन्होंने तुरन्त उस असुर
(हिरण्याक्ष) को मार डाला, यद्यपि वह
भगवान् से लड़ने का प्रयास कर रहा
था।

श्लोक 32: तत्पश्चात् भगवान्
वराह ने उस असुर को जल के भीतर
मार डाला जिस तरह एक सिंह हाथी
को मारता है। भगवान् के गाल तथा
जीभ उस असुर के रक्त से उसी तरह
रँगे गये जिस तरह हाथी नीललोहित
पृथ्वी को खोदने से लाल हो जाता है।

श्लोक 33: तब हाथी की तरह
क्रीड़ा करते हुए भगवान् ने पृथ्वी को
अपने सफेद टेढ़े दाँतों के किनारे पर
अटका लिया। उनके शरीर का वर्ण
तमाल वृक्ष जैसा नीलाभ हो गया और
तब ब्रह्मा इत्यादि ऋषि उन्हें पूर्ण
पुरुषोत्तम भगवान् समझ सके और
उन्होंने सादर नमस्कार किया।

श्लोक 34: सारे ऋषि अति आदर
के साथ बोल पड़े “हे समस्त यज्ञों के
अजेय भोक्ता, आपकी जय हो, जय
हो, आप साक्षात् वेदों के रूप में

विचरण कर रहे हैं और आपके शरीर के रोमकूपों में सारे सागर समाये हुए हैं। आपने किन्हीं कारणों से (पृथ्वी का उद्धार करने के लिए) अब सूकर का रूप धारण किया है।

श्लोक 35: हे प्रभु, आपका स्वरूप यज्ञ सम्पन्न करके पूजा के योग्य है, किन्तु दुष्टात्माएँ इसे देख पाने में असमर्थ हैं। गायत्री तथा अन्य सारे वैदिक मंत्र आपकी त्वचा के सम्पर्क में हैं। आपके शरीर के रोम कुश हैं, आपकी आँखें घृत हैं और

आपके चार पाँव चार प्रकार के सकाम कर्म हैं।

श्लोक 36: हे प्रभु, आपकी जीभ यज्ञ का पात्र (स्रक्) है, आपका नथुना यज्ञ का अन्य पात्र (स्रुवा) है। आपके उदर में यज्ञ का भोजन-पात्र (इडा) है और आपके कानों के छिद्रों में यज्ञ का अन्य पात्र (चमस) है। आपका मुख ब्रह्मा का यज्ञ पात्र (प्राशित्र) है, आपका गला यज्ञ पात्र है, जिसका नाम सोमपात्र है तथा आप जो भी चबाते हैं वह अग्निहोत्र कहलाता है।

श्लोक 37: हे प्रभु, इसके साथ ही साथ सभी प्रकार की दीक्षा के लिए आपके बारम्बार प्राकट्य की आकांक्षा भी है। आपकी गर्दन तीनों इच्छाओं का स्थान है और आपकी दाढ़ें दीक्षा-फल तथा सभी इच्छाओं का अन्त हैं, आप की जिह्वा दीक्षा के पूर्व-कार्य हैं, आपका सिर यज्ञ रहित अग्नि तथा पूजा की अग्नि है तथा आप की जीवनी-शक्ति समस्त इच्छाओं का समुच्चय है।

श्लोक 38: हे प्रभु, आपका वीर्य
सोम नामक यज्ञ है। आपकी वृद्धि
प्रातःकाल सम्पन्न किये जाने वाले
कर्मकाण्डीय अनुष्ठान हैं। आपकी
त्वचा तथा स्पर्श अनुभूति अग्निष्टोम
यज्ञ के सात तत्त्व हैं। आपके शरीर के
जोड़ बारह दिनों तक किये जाने वाले
विविध यज्ञों के प्रतीक हैं। अतएव
आप सोम तथा असोम नामक सभी
यज्ञों के लक्ष्य हैं और आप एकमात्र
यज्ञों से बँधे हुए हैं।

श्लोक 39: हे प्रभु, आप पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं और वैश्विक-प्रार्थनाओं, वैदिक मंत्रों तथा यज्ञ की सामग्री द्वारा पूजनीय हैं। हम आपको नमस्कार करते हैं। आप समस्त दृश्य तथा अदृश्य भौतिक कल्मष से मुक्त शुद्ध मन द्वारा अनुभवगम्य हैं। हम आपको भक्ति-योग के ज्ञान के परम गुरु के रूप में सादर नमस्कार करते हैं।

श्लोक 40: हे पृथ्वी के उठाने वाले, आपने जिस पृथ्वी को पर्वतों

समेत उठाया है, वह उसी तरह सुन्दर लग रही है, जिस तरह जल से बाहर आने वाले क्रुद्ध हाथी के द्वारा धारण की गई पत्तियों से युक्त एक कमलिनी।

श्लोक 41: हे प्रभु, जिस तरह बादलों से अलंकृत होने पर विशाल पर्वतों के शिखर सुन्दर लगने लगते हैं उसी तरह आपका दिव्य शरीर सुन्दर लग रहा है, क्योंकि आप पृथ्वी को अपनी दाढ़ों के सिरे पर उठाये हुए हैं।

श्लोक 42: हे प्रभु, यह पृथ्वी चर तथा अचर दोनों प्रकार के निवासियों

के रहने के लिए आपकी पत्नी है और आप परम पिता हैं। हम उस माता पृथ्वी समेत आपको सादर नमस्कार करते हैं जिसमें आपने अपनी शक्ति स्थापित की है, जिस तरह कोई दक्ष यज्ञकर्ता अरणि काष्ठ में अग्नि स्थापित करता है।

श्लोक 43: हे पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्, आपके अतिरिक्त ऐसा कौन है, जो जल के भीतर से पृथ्वी का उद्धार कर सकता? किन्तु यह आपके लिए बहुत आश्चर्यजनक नहीं है,

क्योंकि ब्रह्माण्ड के सृजन में आपने
अति अद्भुत कार्य किया है। अपनी
शक्ति से आपने इस अद्भुत विराट
जगत की सृष्टि की है।

श्लोक 44: हे परमेश्वर,
निरसन्देह, हम जन, तप तथा सत्य
लोकों जैसे अतीव पवित्र लोकों के
निवासी हैं फिर भी हम आपके शरीर
के हिलने से आपके कंधों तक
लटकते बालों के द्वारा छिडके गए
जल की बूँदों से शुद्ध बन गये हैं।

श्लोक 45: हे प्रभु, आपके अद्भुत कार्यों की कोई सीमा नहीं है। जो भी व्यक्ति आपके कार्यों की सीमा जानना चाहता है, वह निश्चय ही मतिभ्रष्ट है। इस जगत में हर व्यक्ति प्रबल योगशक्तियों से बँधा हुआ है। कृपया इन बद्धजीवों को अपनी अहैतुकी कृपा प्रदान करें।

श्लोक 46: मैत्रेय मुनि ने कहा : इस तरह समस्त महर्षियों तथा दिव्यात्माओं के द्वारा पूजित होकर भगवान् ने अपने खुरों से पृथ्वी का

स्पर्श किया और उसे जल पर रख दिया।

श्लोक 47: इस प्रकार से समस्त जीवों के पालनहार भगवान् विष्णु ने पृथ्वी को जल के भीतर से उठाया और उसे जल के ऊपर तैराते हुए रखकर वे अपने धाम को लौट गये।

श्लोक 48: यदि कोई व्यक्ति भगवान् वराह की इस शुभ एवं वर्णनीय कथा को भक्तिभाव से सुनता है अथवा सुनाता है, तो हर एक के

हृदय के भीतर स्थित भगवान्
अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

श्लोक 49: जब पूर्ण पुरुषोत्तम
भगवान् किसी पर प्रसन्न होते हैं, तो
उसके लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं
रहता। दिव्य उपलब्धि के द्वारा मनुष्य
अन्य प्रत्येक वस्तु को नगण्य मानता
है। जो व्यक्ति दिव्य प्रेमाभक्ति में अपने
को लगाता है, वह हर व्यक्ति के हृदय
में स्थित भगवान् के द्वारा सर्वोच्च
सिद्धावस्था तक ऊपर उठा दिया
जाता है।

श्लोक 50: बेइन्ग़् मनुष्य के अतिरिक्त ऐसा प्राणी कौन है, जो इस जगत में विद्यमान हो और जीवन के चरम लक्ष्य के प्रति रुचि न रखता हो? भला कौन ऐसा है, जो भगवान् के कार्यों से सम्बन्धित उन कथाओं के अमृत से मुख मोड़ सके जो मनुष्य को समस्त भौतिक तापों से उबार सकती हैं?

* * * * *

श्रीलगुरुदेव